मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। ''मेरी अध्यक्षता में सम्पूर्ण प्राकृत-जगत् क्रियाशील है।'' भाव यह है कि असुरों में इस जगत् की सृष्टि का कोई यथार्थ ज्ञान नहीं होता; उनमें से प्रत्येक का अपना विशेष मत है। उनके अनुसार, शास्त्रों का कुछ भी अर्थ किया जा सकता है, क्योंकि वे शास्त्रीय-विधानों को प्रामाणिक रूप से समझने में विश्वास नहीं रखते।

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः।।९।।

एताम्=इस; **दृष्टिम्**=अपनी बुद्धि द्वारा निर्णय किए हुए मत को; **अवष्टभ्य**=अवलम्बन करके; **नष्ट आत्मानः**=देह से भिन्न आत्मतत्त्व को न जानने वाले; **अल्प-बुद्धयः**=तुच्छ मति वाले; **प्रभवन्ति**=उत्पन्न होते हैं; **उग्रकर्माणः**=हिसा आदि क्रूर-कर्म करने वाले; **क्षयाय**=नाश के लिए; **जगतः**=जगत् का; **अहिताः**=सबका बुरा करने वाले दुष्ट।

अनुवाद

इस प्रकार के मतों को धारण करके जिनका आत्मज्ञान नष्ट हो गया है, जो अल्पबुद्धि हैं और क्रूर कर्मों द्वारा सब का अहित करते हैं, वे आसुरी स्वभाव वाले मनुष्य जगत् के नाश के लिए ही उत्पन्न होते हैं।।९।।

तात्पर्य

आसुरी स्वभाव वाले ऐसे क्रूर कर्मों में प्रवृत्त हो रहे है, जिनसे जगत् का नाश हो जायगा। श्रीभगवान् कहते हैं कि वे अल्पज्ञ हैं, अर्थात् उनकी मति अति तुच्छ है। ईश्वर की धारणा से शून्य विषयी समझते हैं कि वे उन्नति कर रहे हैं; परन्तु भगवद्गीता के मत में तो वे बुद्धिहीन और विचारशून्य ही हैं। वे इस प्राकृत-जगत् को अधिक से अधिक भोगना चाहते है; अतः इन्द्रिय-तृप्ति के लिए कुछ न कुछ नया आविष्कार करने में ही लगे रहते हैं। आज समाज में ऐसे आविष्कारों को उन्नति-सूचक माना जाता है। परन्तु इसका परिणाम यह है कि लोगों में हिंसा और क्रूरता बढ़ रही है। पशुओं से क्रूरता की तो बात ही क्या, वे तो आपस में भी व्यवहार करना नहीं जानते—मनुष्य मनुष्य से क्रूरता करता है। आसुरी स्वभाव वाले मनुष्यों में पशु-हिंसा की प्रमुखता रहती है। ऐसे नरपशु वास्तव में संसार के शत्रु हैं, क्योंकि अपने उग्रकर्मों की श्रृंखला में वे एक दिन ऐसा आविष्कार कर लेंगे, जिससे सबका नाश हो जायगा। प्रकारान्तर से यहाँ अणु बमों के निर्माण की पूर्वसूचना है, जिनका आज सम्पूर्ण विश्व को बड़ा गर्व है। किसी भी क्षण भीषण युद्ध छिड़ सकता है। उस परिस्थिति में ऐसे बमों का भयंकर परिणाम होगा। जैसा श्लोक में स्पष्ट है, ऐसे अस्त्रों को केवल जगत् के नाश के लिए बनाया जाता है। मानवसमाज द्वारा इस प्रकार के अस्त्रों के आविष्कार का एकमात्र कारण नास्तिकता है; इनका उद्देश्य जगत् में सुख-समृद्धि और शान्ति करना नहीं है।